

द्वारीका जिला

नगर :- \_\_\_\_\_

विजयादशमी का महत्व:-

- समाज में नया चैतन्य, आत्मविश्वास एवं विजय की आकांक्षा निर्माण कर, उसकी सिद्धि के लिए शक्ति की उपासना करने के लिए, उसे प्रवृत्त करने के निमित्त यह विजया दशमी का उत्सव एक परंपरा प्राप्त साधन है। आज अपना देश पहले से कहीं अधिक व तेज गति से आगे बढ़ रहा है।
- आज का दिन विजय के संकल्प का दिन है। यह विजय न किसी एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति पर और न ही किसी देश की दूसरे देश पर विजय है। अपितु यह धर्म की अधर्म पर, नीति की अनीति पर, सत्य की असत्य पर, प्रकाश की अंधकार पर और न्याय की अन्याय पर विजय है। अपनी परंपरा में आज का दिन स्फूर्ति का दिवस है। आज के दिन ही दैवी प्रवृत्ति द्वारा दानवी प्रवृत्ति पर विजय प्राप्त की गयी थी। यही वो दिन है जिस दिन प्रभु श्री राम द्वारा रावण पर विजय प्राप्त की गयी थी। इस दिन शस्त्रपूजन की भी परंपरा है। बारह वर्ष के वनवास तथा एक वर्ष के अज्ञातवास के पश्चात पांडवों ने अपने शस्त्रों का पूजन इसी दिन किया था और उन्हें पुनः धारण किया था। विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी हिन्दुत्व का स्वाभीमान लेकर हिन्दु पद-पादशाही की स्थापना करने वाले छत्रपति शिवाजी द्वारा सीमोल्लंघन की परंपरा का प्रारंभ भी आज के दिन हुआ था। दुनिया के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन "आर.एस.एस." की स्थापना भी "डॉ.हेडगेवार" द्वारा नागपुर में आज के दिन की गयी थी। शक्ति संचय से आज देश में फैली कुरीतियों को समाप्त करने में अपनी व्यक्तिगत भूमिका तय करने का दिन भी है।

संघ स्थापना :-

- "डॉ. केशव राव बलिराम हेडगेवार जी" ने 1921 में असहयोग आन्दोलन में सत्याग्रह कर गिरफ्तारी दी और उन्हें एक वर्ष की जेल हुयी। जेल जीवन के दौरान जो अनुभव पाए, उससे वह यह सोचने को प्रवृत्त हुए कि समाज में जिस एकता और धुंधली पड़ी देशभक्ति की भावना के कारण हम परतंत्र हुए हैं वह केवल जन आन्दोलन से जागृत और पृष्ठ नहीं हो सकती। जन-तन्त्र के परतंत्रता के विरुद्ध विद्रोह की भावना जगाने का कार्य बेशक चलता रहे लेकिन राष्ट्र जीवन में गहरी हुयी विघटनवादी प्रवृत्ति को दूर करने के लिए कुछ भिन्न उपाय की जरूरत है।
- इसी प्रश्न का उत्तर खोजते हुए डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी ने यह निष्कर्ष निकाला की हिन्दु समाज का बिखरा होना ही हमारी अधिकांश समस्याओं का मूल कारण है। उन्होंने यह भी सोचा कि जब तक हिन्दु समाज संगठित नहीं होगा, तब तक या तो आजादी मिलेगी ही नहीं और यदि मिल भी गयी तो ज्यादा दिनों तक टिकेगी नहीं। इसलिए हिन्दु समाज का संगठित होना अति आवश्यक है। भारत-पाकिस्तान बटवारा उदा.

संघानुसार जागृत :-

- परिवार जागृत हो जाए, समाज जागृत हो जाए, शिक्षा केन्द्र जागृत हो जाए।
- सामाजिक संगठन जागृत हो जाए, सामाजिक संस्थाएँ जागृत हो जाए।
- अब इस हेतु संघ का विचार और कार्य चल रहा है।
- चुनौतियों की चिंता करने वाला समाज, परिवार, शिक्षा, केन्द्र, संगठन, संस्था, देश बने यह संघ के शताब्दी वर्ष का लक्ष्य है।
- न केवल चिंता करने वाला बल्कि समस्याओं का वह चुनौतियों का हल करने वाला समाज निर्मित हो यह संघ का लक्ष्य है। अब हम दिशा में हम स्वयंसेवकों की महत्व भूमिका रहने वाली है।

सामाजिक समरसता :-

- "सामाजिक समरस्ता" देश के विकास के लिए सामाजिक एकता की आवस्यकाता होती है और समाज में एकात की पूर्व शर्त है सामाजिक समता, जब समात आएगी तो सामाजिक एकता अपने आप आएगी, इसके लिए हमें प्रयत्न करना होगा।

सामाजिक समरसता के लिए भारतीय जीवन मूल्यों को आचरणीय बनाने की आवश्यकता है। समरसता की शुरुआत स्वयं से करनी होगी, "हजार भाषणों से ज्यादा असर एक कार्यकर्ता के व्यवहार का होता है।" इसलिए हमारा मन निर्मल हो, हमारा वचन दंशमुक्त हो, हमारे वचन से किसी को पीड़ा नह हो। हम सबका व्यवहार सभी लोगों को अपना मित्र बनाने वाला होगा, तब समाज का भाव विकसित होगा।

अपने परिवार में ऐसा वातावरण बनाएं, जिससे सामाजिक समरसता को बल मिले।

अपने व्यवहार में जब तक ये मूल्य प्रकट नहीं होंगे, तब तक समता का दर्शन समाज में नहीं हो सकता। हमें अपने जीवन में मूल्यों को मन, मस्तिष्क और व्यवहार में आचरणीय बनाना होगा।

समाज में नया चैतन्य, आत्मविश्वास एवं विजय की आकांक्षा निर्माण कर उसकी सिद्धि के लिए शक्ति की उपासना करने के लिए उसे प्रवृत्त करने के निमित्त यह विजया दशमी का उत्सव एक परम्परा प्राप्त साधन ही है। आज अपना देश पहले से कहीं अधिक व तेज गति से आगे बढ़ रहा है। विकास, विस्तार व स्वाभिमान के अनेक कीर्तिमानों को हमने स्थापित किया है और करते भी जा रहे हैं। आज प्रत्येक राष्ट्रभक्त के मनो में भारत बसता है। भारत बोध के आधार पर आगे बढ़ना, ये अब हमारी प्राथमिकता में पहले से अधिक हो गया है। स्वदेशी, स्वभाषा, आत्मनिर्भरता, शिक्षा, सैन्य शक्ति, कृषि सब क्षेत्रों में एक नया क्षितिज हमारे सामने है। यह इक्कीस वीं सदी का भारत सभी नेतृत्व करने के लिए सबको साथ लेकर चलने के लिए तैयार है।

### पर्यावरण में हमारी भूमिका :-

हम आदी अनादी काल से प्रकृति पुजक रहे हैं। हमारी संस्कृति में हमने पेड़ों को देवताओं के स्वरूप माना है। प्राचीन समय में ऋषि मुनियों ने गंभीर से गंभीर बीमारियों का इलाज प्रकृति प्रदत्त इन्हीं पेड़ों कि ओषधीयों का हमने सदैव जीवन रक्षण किया है। इसलिए प्रकृति को हमने सदैव जवीन रक्षक देवताओं के स्वरूप माना है।

वर्तमान समय में प्लास्टिक से निर्मित वस्तु हमारे जीवन का हिस्सा होती जा रही है किन्तु प्लास्टिक जमीन में जाकर जमीन को बंजर कर देती है। अर्थात् मिटटी की ऊर्वरक क्षमता को समाप्त कर देती है।

वैज्ञानिकों के शोध के माध्यम से यह भी सिद्ध हुआ है की कैंसर जैसी गंभीर बिमारी आज एक आम बिमारी के स्वरूप में उत्पन्न होने लगी है इसका मुख्य कारण प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का उपयोग करना ही है। अर्थात् यह हमारा नैतिक कर्तव्य बनता है की हम अपने परिवार, समाज में होने वाले सभी प्राकर के आयोजनों में प्लास्टिक के उपयोग का बहिस्कार करें।

वर्तमान समय में लाखों पेड़ों को काटा जा रहा है। जिससे जमीन की जल संग्रहण क्षमता लगातार घटती जा रही है। इसलिए प्रत्येक घर कि छतों पर जल पुर्नभरण कि व्यवस्था होना चाहिए जिससे जमीन में जल का स्तर न घटे।

### कुटुम्ब प्रबोधन :-

हमारे देश कि विचारधारा वसुधैव कुटुम्बकं की रही है अर्थात् हम लोग इस सम्पूर्ण विश्व को हमारा परिवार मानते हैं इस विचारधारा कि मूल जड़ का कारण इसी वजह से है कि वर्षों से हमारी इस पुण्य भूमि पर हम संयुक्त परिवार कि पृष्ठ भूमि में रहने वाले लोग। अर्थात् हमारी संस्कृति सदैव मिलजुल कर रहने वाली रही है और यही कारण है कि हमारे परिवार के वरिष्ठ लोगो ने हमारे घर कि संस्कृति को एक आदर्श हिन्दु परीवार संस्कृति बनाने के लिए हमारा मार्गदर्शन किया है।

हमारे भवनो का निर्माण इस प्रकार होना चाहिए कि बाहर से देखने पर वह एक आदर्श हिन्दु भवन लगना चाहिये और घर के अन्दर प्रवेश करते ही आगंतुको को यह लगना चाहिए कि यह एक आदर्श हिन्दु परिवार है। घर की दिवारों पर हिन्दु प्रति चिन्ह होना चाहिये, घर में देवालय होना चाहिये।

हमारे परिवार में शुद्ध मातृ भाषा का उपयोग होना चाहिये, जिससे परिवार में एक दुसरे का आदर हो, सम्मान हो ऐसे शब्दों का उपयोग करना चाहिये।

परिवार में सभी का भोजन साथ में होना चाहिए। यदी नित्य नही हो पा रहा है तो माह में एक बार ग्रह सभा होनी चाहिए और सामुहिक भोजन होना चाहिए।

परिवार के साथ भ्रमण भी सामूहिक रूप से ही होना चाहिये भ्रमण का स्थान देवालय हो, तीर्थ क्षेत्र हो, धार्मिक स्थल हो, जिससे सम्पूर्ण परिवार में धर्म और संस्कृति का जीवन में समावेश हो।

### शताब्दी वर्ष में हमारी भूमिका :-

- देश की एकता और अखण्डता को बनाए रखने के साथ भारत की संस्कृति, सांस्कृतिक धरोहरों और राष्ट्रवादी विचारधारा को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु शताब्दी वर्ष में हमारी भूमिका है।
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष की तैयारियां अभी से शुरू हो गई हैं। 2025 में संघ का गठन हुए 100 साल हो जाएगा। सन 2025 अर्थात् संघ की स्थापना के 100 वर्ष होने पर प्रत्येक मण्डल / मोहल्ला स्तर पर हम सामूहिक शक्ति की सशक्त टोली खड़ी करें। यह आज के दिन हमारा संकल्प होना चाहिए, इस हेतु हम प्रतिद्ध बने, समय दे कार्य का विस्तार करें, तभी भारत को शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में खड़ा कर सकेंगे।
- संघ स्थापना के आरंभ काल में संघ का उपहास, तिरस्कार, दमन, प्रतिबंध, सब करने का प्रयास किया गया। संघ का विचार नहीं रूका। 1948 गांधी जी के हत्या से 1992 अंतिम प्रतिबंध तक सभी प्रकार के प्रयास संघ को रोकने के लिए किए गए। परंतु संघ का कार्य एवं विचार नहीं रूका।
- संघ का विचार एवं संघ की स्वीकार्यता का भाव समाज में बढ़ा है। सहभागी समाज की भूमिका भी बदली है समाज का हर वर्ग संघ से जुड़ रहा है।
- वर्तमान में इस चरण में संघ ने भी परिवर्तन किये हैं।
- अब संघ के विचारों को स्थापित करने का समय है।
- समाज जागृति के सभी प्रेरणा केंद्र जो अपने स्तर पर अपने प्रयास से समाज और राष्ट्र के लिए कार्य कर रहे हैं। इस प्रकार के सभी प्रेरणा केंद्र समाज एवं राष्ट्र जागरण के प्रेरणा पुंज हो जाए यही कार्य संघ का है। इसी कार्य में हमारी महत्वपूर्ण भूमिका रहनी चाहिए।

### शताब्दी वर्ष निमित्त कार्य :-

- कार्य का द्रष्टीकरण करें एवं कार्यकर्ता का द्रष्टीकरण करना। संघ कार्य को मजबूत करना जड़ मजबूत हो जाए फिर आंधी तूफान आए तो भी चिंता नहीं।
- अपनी बस्ती की सूची कितनी कितने कार्यकर्ता सक्रिय और कितने कार्यकर्ता कार्य में नहीं लगे इसका आकलन करें कार्य का विभाजन वह नियोजन करना।
- बस्ती में रहने वाले सभी अनुसांगिक संगठनों के कार्यकर्ताओं से सामंजस्य स्थापित कर बस्ती की सामूहिक ऊर्जा बस्ती में दिखना चाहिए एवं सामूहिक प्रयास से बस्ती में सामाजिक परिवर्तन होना चाहिए। सज्जन शक्ति का मार्गदर्शन कर स्वदेशी, पर्यावरण, सामाजिक समरस्ता आदि में नियोजन करना।

### चार मित्र :- भारत, राष्ट्र, हिन्दु, स्व।

#### 1. भारत -

- हमारे देश का नाम भारत जैनीयों के पहले तिर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम से प्रचलन में आया।
- भारत का अर्थ -** “भा” याने ज्ञान “रत” याने एकाकार होकर रत हो जाना।
- हमारे देश में ज्ञान का भंडार है। हमारे ऋषि मुनियों ने ज्ञान के माध्यम से समस्त मानव जाती के कल्याण के लिए अनेक अविष्कार किये।

### नैरेटिव (Narrative) भारत, ब्रिटिश दासता के काल से एक राष्ट्र के रूप में उभरा।

- जबकि सत्य तो यह है कि हमारा यह राष्ट्र हजारों वर्षों की सतत साधना से खड़ा हुआ है। Nation State की कल्पना यूरोपीय कल्पना है, जो विशुद्ध रूप से राजनीतिक है। इस यूरोपीय विचार से भारत अनेक राजे-राजवाड़े होने के कारण एक Nation जरूर नहीं था। पर हमारे यहाँ राष्ट्र कोई राजनीतिक विचार नहीं है। राष्ट्र की भारतीय कल्पना “One Currency – One King” की Nation की परिभाषा के समान नहीं है। हमारी राष्ट्र की कल्पना इससे कहीं ज्यादा व्यापक है। शासन निरपेक्ष है। तुलसीकृत रामचरित मानस में मन्थरा के मुख से भी तुलसीदास जी ने कहलवाया है - 'कोई नृप होहूँ हमें का हानि।'

#### 2. राष्ट्र -

- भारत की हमारी यही संकल्पना चारों धामों के माध्यम से व्यक्त होती है। तीर्थस्थानों से ही हमारी सांस्कृतिक एकता दृष्टिगोचर होती है। नदियों, पर्वतों, भूमि के प्रति मातृभाव पूरे भारत में देखने को मिलता है। हमारे मानबिन्दु, जैसे- गंगा, गोदावरी, काशी, कांची आदि सभी स्थानों पर पवित्र माने जाते हैं। राष्ट्र की हमारी दृष्टि एक है। जहाँ धर्म है, वहाँ राष्ट्र है। हमारे राष्ट्र का आधार धर्म और संस्कृति हैं।
- भारत में विद्यमान विविधता स्थानीयता/क्षेत्रीयता के कारण है, अन्यथा सांस्कृतिक रूप से पूरा भारत एक ही है। खान-पान, पहनावे आदि की विविधताएँ भी क्षेत्र और जलवायु के कारण हैं। ये सांस्कृतिक भेद नहीं हैं।

पर हम हमारी इन विविधताओं को कैसे परिभाषित करेंगे, कैसे इनका बचाव करेंगे? हमें यह कहना होगा कि मानवीय मूल्य एकसमान हैं। विश्व में राहें अलग-अलग होंगी, किन्तु गन्तव्य तो पूरे विश्व का एक ही है। भारत विविधताओं में एकता की संस्कृति है। भारत में विद्यमान सभी तरह की विविधताएँ एक ही संस्कृति की विविध अभिव्यक्तियाँ मात्र हैं।

**नैरेटिव (Narrative) भारत का इतिहास मिथक है।**

जबकि सत्य तो यह है कि जिसे माइथोलॉजी कहा जा रहा है, वह भारत के हजारों वर्षों का गौरवशाली इतिहास है। पर यह सिद्ध कैसे होगा? इसके लिए हमें हमारे सारे मूलग्रंथ उनकी गहराई में जाकर पढ़ने होंगे। इसी के आधार पर हमें लोगों को यह बताना होगा कि ईसाइयों ने अपनी इस मान्यता को बचाने के लिए कि 2000 वर्ष पूर्व ही सृष्टि का निर्माण हुआ है; हमारे इतिहास के साथ छोड़छाड़ की। उन्होंने अपने दुराग्रहों के चलते भारतीय इतिहास से सहस्राब्दियों का इतिहास मिटा दिया।

**नैरेटिव (Narrative) भारत में न तो आर्थिक क्षमता थी, और न यहाँ किसी तरह का कोई कौशल ही था। सर्वत्र केवल गरीबी ही व्याप्त थी।**

जबकि सत्य यह है कि भारत शुरु से उद्यमशील रहा है। यहाँ उद्योग-धंधे प्राचीनतम काल से फल-फूल रहे थे। सकल घरेलू उत्पाद कहें या व्यापार दोनों में भारत विश्व का अग्रणी देश था। और यदि एकबारगी इस विमर्श को सच मान भी लें तो फिर इस प्रश्न का क्या जवाब है कि अंग्रेजों समेत पूरे यूरोपीय देशों के लोग इस गरीब पिछड़े देश में क्या लेने आए थे?

हमें यह बताना होगा कि किस तरह मार्कोपोलो सहित अनेक प्राचीन यूरोपीय एवं अरबी वृत्तकारों ने भारत के उद्योगों का, व्यापार प्रणाली का केवल उल्लेख ही नहीं, बल्कि विशद वर्णन किया है। भारत कृषिप्रधान था, लेकिन यहाँ का अर्थतंत्र केवल कृषिप्रधान नहीं था। भारत का अर्थतंत्र मुख्यतः उत्पादन और विनिर्माण पर आधारित था।

**नैरेटिव (Narrative) भारत एक रूढ़िवादी और विज्ञान-विरोधी देश है।**

जबकि सत्य तो यह है कि हमारे यहाँ विज्ञान की अतिसमृद्ध परम्परा रही है। ये तो अंग्रेजों ने हमारी छबि साँप का खेल दिखाने वाले सपेरों की बना दी। अन्यथा यशपाल जी, सुरेश सोनी जी की पुस्तकें पढ़िए, ताकि प्राचीन भारत में विज्ञान की वास्तविक स्थिति को समझ सकें।

हमारा पंचांग में वैज्ञानिक रूप से निर्मित है। सिन्धु-सरस्वती सभ्यता के हड़प्पा व मोहनजोदड़ो में चिकित्सकीय विधियों के साक्ष्य पाए गए हैं। शल्यचिकित्सक सुश्रुत के द्वारा बनाए गए यंत्र थोड़े-बहुत परिवर्तनों के साथ आज भी सर्जरी में उपयोग किए जाते हैं। इनके अलावा स्थापत्यशास्त्र, मूर्तिकला आदि के अवशेष, भीमबेटिका और सिंधनपुर की गुहाचित्र आदि हमारी प्राचीन वैज्ञानिकता को प्रमाणित करते हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने Traditional Indian Agriculture Knowledge पर सात पुस्तकें लिखी। इनमें कई अद्भुत प्रयासों के उल्लेख हैं।

### 3. हिन्दु –

हिन्दुत्व एवं हिन्दुवादी में अंतर जैसे –

**हिन्दुत्व याने –** सेवा, समर्पण, त्याग।

(हिन्दवः सोदराः सर्वे, न हिन्दु पतितो भवेत्। मम दिक्षा हिन्दु रक्षा मम मंत्रः समानता।)

**हिन्दुवादी याने –** वाद विवाद पैदा करना इसलिए हम अपने आप को हिन्दुवादी नहीं कहते हैं।

**हिन्दुत्व याने –** जीवनतः पद्धति, जीवन जिने की कला।

### 4. स्व का भाव :-

1857 की क्रांति को असफल करके कहीं न कहीं हमारे स्व के भाव को विस्मृत करने का प्रयास किया गया।

जिसके परिणाम स्वरूप हम देश को स्वतंत्रता प्राप्त करने में 90 वर्ष लगे।

हम सदैव सम्पूर्ण विश्व में वसुधैव कुटुम्बकं के प्रणेता रहे हैं।

शिकागो के अधिवेशन में स्वामी विवेकानन्द के द्वारा दिया गया उदबोधन इस देश के स्व के भाव का प्रकटीकरण का उदाहरण है।

इस पुण्य भूमि पर देश के महान क्रांतिकारियों ने धर्म और देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है।

शक, हुण, कुषाण, अफगानी, मुगल और अंग्रेजों ने हमारे अस्तित्व को समाप्त करने का प्रयास किया किन्तु हमारे देश के महान क्रांतिकारियों ने स्व के भाव को जाग्रत करते हुए भागीरथी प्रयास करके इस देश के अस्तित्व को अक्षुण्ण रखा किन्तु यह देश का दुर्भाग्य ही होगा कि स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पश्चात तात्कालिक सरकार ने इस देश के स्व के भाव को विस्मृत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी और देश के मान बिन्दुओं से समझौता कर के हमारी संस्कृति, परंपरा की एक रूपता को विस्मृत करने में सहयोग किया।

साहित्यो और पाठ्य क्रमों से कम्प्यूनिष्ट विचार धारा के लोगों ने हमारी गौरवशाली अतीत के सहर्ष को भूलकर तृष्णीकरण करके गलत साहित्य पढ़ाया गया। हमारे स्वाभिमान, संघर्ष, समर्पण को विस्मृत करने का प्रयास किया।

अविरत 5.....

- हम सभी को प्रतिनिधि सभा के प्रस्ताव ('नवलखा प्रस्ताव') का पारायण करना चाहिए।
- स्व का तंत्र, ही हिन्दुराजनीतिशास्त्र है। 'Hindu Polity' एवं 'दैशिकशास्त्र', ये दोनों पुस्तके पठनीय हैं।
- सात्विक राज्य कैसा होना चाहिए? पं. दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानवदर्शन में इसका उल्लेख किया है।
- स्वामी विवेकानन्द कहते हैं, "जैसे प्रत्येक मनुष्य का अद्वितीय व्यक्तित्व होता है, ठीक वैसे ही राष्ट्र का भी अद्वितीय व्यक्तित्व होता है - एकमेवाद्वितीय।"
- हम सभी अद्वितीय हैं। इसे चिति कहते हैं, और इसे व्यक्त करने वाला ही व्यक्ति कहलाता है। अतः जैसे व्यक्ति का स्व होता है, उसी तरह राष्ट्र का भी स्व होता है, स्वभाव होता है। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन का स्वभाव है-साम्राज्य, संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) का स्वभाव है - व्यापार। इसलिए जब ब्रिटेन प्रभावी हुआ तो पूरी दुनिया को उसने अपना साम्राज्य बना लिया, जब अमेरिका प्रभावी हुआ तो उसने पूरी दुनिया को बाजार बना लिया। जर्मनी प्रभावी हुआ तो उसने पूरे विश्व को युद्धभूमि बना दिया। वैसे ही भारत का स्वभाव है - धर्म। इसलिए जब भारत प्रभावी होगा तो विश्व में शांति, समृद्धि और धर्म की स्थापना होगी। उदाहरण के लिए, कम्बू ने कम्बोडिया में जाकर राज्य नहीं बल्कि संस्कृति की स्थापना की।
- प्रत्येक राष्ट्र की एक नियती होती है। और भारत की नियती है, विश्वगुरु बनना। **कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्**
- प्रत्येक राष्ट्र का एक व्रत होता है, अभियान और प्रयोजन होता है। तो भारत का व्रत क्या है? वह है - स्व का अर्थतंत्र, राज्यतंत्र स्थापित करना। हमें भारत के संविधान को समझना होगा, क्योंकि भारत का संविधान भारत के स्व की अभिव्यक्ति है। हमें संविधान की भारतीय दृष्टि से व्याख्या करनी होगी। वर्ष 2047 तक करने का यह हमारा लक्ष्य है।
- भारत का स्वभाव है कि यहाँ व्यवस्थाएँ शासन निरपेक्ष थीं। यहाँ धर्म का दण्ड था।
- गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, न्यायप्रणाली, और समाज व्यवस्था; ये सभी यहाँ उत्कृष्ट थीं। कोई विवाद नहीं था। ये तो खिलजी था, नालंदा, विक्रमशिला जैसे हमारे ज्ञान के केन्द्रों को जला दिया।
- हमें भी स्व पर आधारित तंत्र, समाज केन्द्रित ऐसी व्यवस्था, ऐसे तंत्र बनाने होंगे।
- नागरिकता (Citizenship)** गाँव में रहने वाला भी नागरिक, कैसे? सही शब्द राष्ट्रता होना चाहिए, क्योंकि सब विराटसमाज पुरुष के अंग हैं।
- इसके लिए अध्ययन और अनुसंधान करना होगा
- स्वयंसेवक का परिचय उसके कार्य व व्यवहार से हो :-**
- स्वयंसेवक का काम और व्यवहार ही उसकी पहचान होनी चाहिए, उसे बताना नहीं पड़े कि वो "आर.एस.एस." से जुड़ा हुआ है।
- वर्तमान चुनौतियाँ :-**
- P.F.I. विजन 2047 एक बड़ी चुनौती**
- विधर्मीयों के द्वारा PFI (पापुलर फ्रंट ऑफ इंडिया) देश के लिए एक बड़ी चुनौती है।
- देश को सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और आर्थिक रूप से अर्थात् चहु ओर से विखण्डित करने का षडयंत्र किया जा रहा है।
- हमारे परिवार कि बहन-बेटियों को बहला फुसला कर झुठे प्रलोभन देकर उनका धर्मान्तरण करना उनकी हत्याएँ करना और हिन्दु समाज को सामाजिक रूप से तहस नहस करना इनका लक्ष्य है वर्तमान समय में हमारे सामने मीडिया, पेपर और टी.वी पर दिखाई जाने वाली घटनाएँ इसका साक्ष्य है।
- आतंकवादी संगठनों को सहयोग करने देश कि सीमाओं को चारो ओर से असुरक्षित करने का षडयंत्र किया जा रहा है। वर्तमान समय में पंजाब और पश्चिम बंगाल इसका जीता जागता उदाहरण है। यहाँ तक कि उनके राज्यों में हिन्दुओं की जमीनों पर कब्जा करके वहाँ से हिन्दुओं को पलायन करने पर मजबूर करके हिन्दुओं को अल्पसंख्यक बनाया जा रहा है जिसे लेण्ड जेहाद कहाँ जाता है। (केरल में एक गाँव की जमीन वक्फ बोर्ड की उदाहरण)
- यदी आकलन और विश्लेषण किया जाए तो हमारे दैनिक जीवन में से कई व्यापार हे जिन पर विद्यार्थियों का ऐकाधिकार है चाहे वो तकनीकी हो (A.C., Mobile, Computer) षडयंत्र की पराकाष्ठा इसे स्तर पर जा पहुची है कि विधर्मी लोग नाम बदलकर हिन्दू धर्म संस्कृति के उपयोग में आने वाली वस्तुओं का व्यापार भी करने लगे है।
- युवा शक्तियों को पथभ्रष्ट करने के लिए उनको कमजोर और खत्म करने के लिए इन्ही विद्यार्थियों के द्वारा नशे का व्यापार फैलाया जा रहा है। जिसमें युवा और युवतियों को धकेला जा रहा है।

- ❧ कहीं ना कहीं हमकों जन संख्या असंतुलन के विषय को भी समझना पड़ेगा।
- ❧ विधर्मियों के युवा वर्ग और हिन्दू समाज के युवाकों में एक पीढ़ी का अन्तर है।
- ❧ हम कहीं ना कहीं एकल परिवार पद्धति के कारण परिवार विस्तार को संकुचित करते जा रहे किन्तु विधर्मी संयुक्त परिवार में रहकर परिवार विचार को महत्व देते हैं। यदी यही स्थिती रही तो कुछ वर्ष पश्चात हिन्दु वर्ग पौड़ होगा और मुस्लीम वर्ग अधिक युवा उपरोक्त सभी षड़यंत्रों का मात्र और एक मात्र लक्ष्य है “गजवा-ए-हिन्द” अर्थात इस्लाम के विस्तार के लिए लड़ी जाने वाली जंग से है। जिसके जरिए भारतीयों को इस्लाम में शामिल किया जा सके। कहीं न कहीं आज कि युवा पीढ़ी को इनसभी विषयों पर गम्भीरता पूर्वक सोच कर इस राष्ट्र को समाज को इन चुनोटियो से लड़कर परम् वैभव पर पहुचाने का मार्ग प्रशस्त करना होगा। अन्यथा हम सभी को 1991 में काश्मीर में होने वाली घटना कि पुनरावृत्ती को देश के हर कोने में देखने के लिए तैयार रहना है।